जुदाई के जज़्बात

(रुमानियत–विरह गीत)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी–46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर–302006
दूरभाष : 0141–2213700, +91–9829018087
ई–मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-95-6
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

JUDAAI KE JAZBAT (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पित

समर्पित है उस निर्मल और पवित्र प्यार को
जो हर पल रोम-रोम में हमेशा विद्यमान है
जो प्रतीक है मीरा, राधा-कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर औ रांझा के सम्बन्धों का
जिसमें घर और परिवार होने का अहसास है
जिसमें बेशुमार प्यार की चाहत व क़शिश है
जिसमें एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
जिसमें तन-मन के संसार होने का विश्वास है
जिसमें विचारों का इज़हार, इक़रार व क़रार है
जिसमें दिल से बेहिसाब बेख़ुदी का आलम है
जिसमें सतरंगी सावन व बसंत का मधुमास है
जिसमें शमा व परवाने की क़ुदरती कायनात है
जिसमें दिल की पुकार में सगुन की शहनाई हैं
जिसमें रस्मों औ रिवाज़ों के तीज व त्यौहार हैं
जिसमें विरह की वेदना मे मिलन की मुरादें हैं
जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की कामना है
जिसमें सदियों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं
जिसमें प्यार एक साधना, उपासना, आराधना है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त में सहयोग की भावना है
जिसमें करवा चौथ के व्रत, सावन के सोमवार हैं
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान है
जिसमें प्रेम की हिफ़ाज़त में दिल से दुआयें हैं
जिसमें हर हालात में एक दूसरे पर ऐतबार है
जिसमें सुहाग के सिंदूर, सात वचन के बंधन है
जिसमें मिलन की तमन्ना ख़ुदा की इबादत है
जिसमें चराग़ों की रोशनी बनने की भावना है
जिसमें प्यार की ख़ुशी में शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी है
जिसमें तन व मन के भाव का ईश्वरीय बोध है।

अनुक्रम

दास्ताने-दीवान	17
ऐसा क्यों होता है	21
महबूब का ऐतबार	25
महबूब का अहसास : एक	26
महबूब का अहसास : दो	29
मुहब्बत के सुबूत : एक	31
मुहब्बत के सुबूत : दो	35
सिर्फ़ तुम	40
मधुर मिलन	46
मन की मुराद	51
महबूब का अक़्स	56
मुहब्बत के सुबूत : तीन	65
मिलन की मन्नत	68
महबूब का तसव्वुर	73
प्यार के अहसास	93
अलविदा मेरे मधुर प्यार	98

'साथी' जहानवी की जुदाई के जज़्बात

कृति 'जुदाई के जज़्बात', 'साथी' जहानवी की प्यार में अनन्त-पथ पर यात्रा का एक और पड़ाव है। एक रूमानियत से भरा विस्तृत जलाशय, एक रंग-बिरंगे, श्वेत-श्याम बादलों से भरपूर नीला-आकाश और प्यार के रंग में रंगी बहु-आयामी धरती, न जाने कितने जज़्बाती इन्द्रधनुष, न जाने कितने चाँद-सितारे और न जाने कितने रिश्ते-नाते, न जाने कितनी आत्मीयता और न जाने कितना परायापन। प्यार के माध्यम से दिल को उलीच देना चाहता है कवि। एक दर्द एक टीस और एक गहरी तड़प है, एक न खत्म होने वाली बेचैनी है इन कविताओं में।

'साथी' जहानवी को काव्य संसार में स्वंय को अभिव्यक्त करने की एक अज़ीब सी ज़िद है। यह ज़िद उनकी कविता को किस मुक़ाम पर ले जायेगी अभी यह तय नहीं है। लेकिन यह ज़िद उनकी कविता का विशिष्ठ गुण धर्म बन गई है। समुद्र में एक क़श्ती की तरह। हवायें इस क़श्ती को कहाँ ले जाकर छोड़ेंगी। अभी निर्धारित नहीं किया जा सकता। एक सुधी पाठक के रूप में आप इस ज़िद की उपेक्षा भी कर सकते हैं और उसका लुफ़्त भी उठा सकते हैं। इस ज़िद को समझना एक चुनौती है।

महाकवि निराला के पास युवा कवियों की एक पूरी पीढ़ी पहुँचती थी, उनसे अपनी कविताओं की परख के लिये। निराला कभी किसी पंक्ति में नयेपन को देखते तो कहते पुन: लिख कर लाओ। कभी अपनी फटकार से उसे बता देते:- 'कबिरा ये घर प्रेम का, खाला का घर नाँहीं, शीश उतारे यूँ ही, धरे सो पेठे घर माँही'।

कवि-कर्म और प्यार के पथ पर चलना यह दोनों ही विकट चुनौती पूर्ण काम है। अभी तक न तो कवि-कर्म की और न ही प्रेम की कोई अन्तिम और सर्व-स्वीकृत परिभाषा निर्धारित हो सकी है। लेकिन दोनों ही काम ऐसे हैं कि अधिकांश लोग जो इन राहों पर चले, लेकिन सफ़र कहीं बीच में ही अधूरा छूट गया। चाहा कुछ, हो कुछ

और ही गया। एक बृज भाषा के कवि ने इसे 'तलवार की धार पे धावनो है' कि संज्ञा दी है। कितने कवि हैं और कितने प्रेमी हैं जो तलवार की धार पर चलने के लिये कृत-संकल्प हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र ने कवियों से उम्मीद जताई थी 'जैसा दिखता है वैसा लिख और जैसा लिखता है वैसा दिख'। वर्तमान परिदृश्य में कितने कवि हैं जो इस वक्तव्य पर खरे उतरते हैं। 'साथी' जहानवी जो क़ोशिश कर रहे हैं उसे प्रोत्साहित किया जान चाहिये। कविता और प्रेम का पथ आज के संवेदहीन युग में उपेक्षित और तिरस्कृत पथ है। वह अलग बात है कि कविता के नाम पर मंचों से चुटकले परोसे जा रहे हैं। तुक़बन्दियों और गलेबाज़ी को कविता का नाम दिया जा रहा है। बाज़ार वाद के इस धन-पिपासू दौर में ये सब कुछ स्वाभाविक है। लेकिन हम इस मनुष्य विरोधी दौर को इन्सानियत का अन्तिम दौर नहीं मान सकते। इस बर्बर दौर के नीचे भी इन्सानियत, संवेदना और त्याग की एक अन्त: सलिला प्रवाहित हो रही है। मेरा मानना है कि आने वाले समय में यह अन्त: सलिला युग की मुख्य धारा बनेगी।

हम 'साथी' जहानवी की कविताओं को अपना पूरा मन और पूरी सहृदयता के साथ पढ़ें। इस काव्य सलिला के मित्र, इसके सहयात्री बनें। मुझे उम्मीद है कि कहीं हमें शब्दों, पंक्तियों और कविताओं के बीच पंख फड़फड़ाते पक्षियों का कलरव गान, उनकी पीड़ा और उनकी मुक्ति की छटपटाहट सुनने को मिलेगी। यही इन कविताओं के अन्दर छुपा मर्म है, यही इस एकान्त काव्य साधक की कहीं छुपी हुई कामना भी है। कवि की यह सात्विक कामना, यह ज़िद अपनी मंज़िल की ओर निरन्तर बढ़ती रहे, यह शुभ-कामना की जा सकती है। कविता और प्रेम दोनों की इस कुरूप संसार को सर्वाधिक ज़रूरत है।

-महेन्द्र नेह
80, प्रताप नगर कोटा-9
मो. : +91-94141 76444

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अजूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

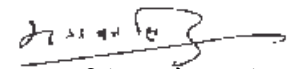

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेज़ुबान तसव्वुर के मंजरे-आम (विमोचन) के बाद सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तसव्वुर, मुहब्बत एक इबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह 'अमावस का चाँद' और 'क़तरा-क़तरा दरिया' आपकी नज़र कर रहा हूँ।

गुज़िश्ता वक़्त में शायरी अपने महबूब से गुफ़्तगू का ज़रिया हुआ करती थी। मेरे यह काव्य संग्रह भी इसी सिम्त महज़ एक कदम है। ज़िन्दगी के सफ़र में मुहब्बत के कई रंग और मन्ज़र से मैं आशना और बावस्ता रहा। मसलन मिलन, तन्हाई, जुदाई, ख़ामोशी, इबादत, गिले-शिक़वे, बेरुख़ी, तौहीन, रन्ज़ो-ग़म, बेचैनी, बेक़रारी, दीवानगी, बेख़याली, बेख़ुदी, इज़हार, इक़रार, सुक़ून, वफ़ा, ज़फ़ा, बेवफ़ाई, रुसवाई, मज़बूरी, हसरत, ऐतबार, इन्तज़ार, मायूसी, बदहाली, क़शिश, चाहत, अहसास, रूठना-मनाना और भी बहुत कुछ। मुहब्बत को जिस तरह से जिया उसे ही शायरी की शक़्ल में तहरीर करने की कोशिश की है याने मुहब्बत के ज़ज़्बात, मुहब्बत के लिये। मुहब्बत के गुलशन को आबाद होने के लिये इज़हार, इक़रार, गुफ़्तगू और मुलाक़ातें इतनी ज़रूरी नहीं है जितना मुहब्बत के अहसास का अपने दिलो-दिमाग़ और ख़्वाबो ख़यालों में हमेशा ज़िन्दा रहना ज़रूरी है।

मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत जो राधा-कृष्ण, हीर-

राँझा, सोनी-महिवाल, लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद की मुहब्बत जैसी है जिसमें निर्मल व पवित्र, इन्सानियत व हमदर्दी की भावनायें हैं और जो अजर-अमर है को समर्पित है जो बेहद मज़बूर,लाचार और बेबस होने के बावजूद भी अपने महबूब से मिलने और एकसार होने के लिये इतनी बेचैन और बेक़रार है कि ख़ास अपनों से और सारे ज़माने से बग़ावत के लिये तैयार है। मगर ज़माने के रस्मो-रिवाज़ और हालात से बहुत बेबस है। मुहब्बत में इस कदर बेख़ुदी का आलम है कि हर वक़्त अपने महबूब का ख़याल ही हमेशा दिल और दिमाग़ में रहता है। सांसों की हर धड़कन में उसका अहसास इतना ज़रूरी है कि उसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है। मुहब्बत में इस कदर जोश व जुनून और दीवानगी है कि जान कुर्बान करने को भी तैयार है। वादे व इरादे और जज़्बात व ख़यालात इस कदर बेहद मज़बूत है कि तमाम उम्र के लिये हर हालात में शरीके हयात बनकर हमसफ़र रहने को तैयार है। विरह की व्याकुल वेदना में अपने तन-मन से भी बेसुध और सारी कायनात से भी बेख़बर है। ख़्वाबों और ख़यालों में सिर्फ़ और सिर्फ़ हर वक़्त अपने महबूब का अक़्स और फलसफ़ा रहता है। मालूम है कि आख़िर में क्या होगा मगर मुहब्बत में दिल और दिमाग़ इतना दीवाना होता है कि किसी की भी नहीं मानता। उसे तो अपना महबूब ही सब कुछ नज़र आता है। यहाँ तक कि ख़ुदा से कम नहीं लगता। मुहब्बत के अहसास, क़शिश और चाहत को मुक़म्मिल तौर पर सही तरह से तहरीर करना बेहद मुश्क़िल है। महबूब का आशियाना जन्नत और ख़ुदाई से बेहतर लगता है। तन्हाई में महबूब की यादों में रहना ज़ियारत से कम नहीं है। जुदाई का वक़्त काले पानी की सज़ा से भी ज़्यादा है। यह कहना बेहद मुनासिब होगा कि मेरी मुहब्बत का यह आख़िरी और मुक़म्मिल फलसफ़ा है कि मेरा प्यार मेरे तन-मन, मेरे दिल औ दिमाग़ यानी मेरी ज़िन्दगी की कायनात का सम्पूर्ण संसार है।

मुहब्बत का यह ख़ूबसूरत सफ़र उस मन्ज़िल पर है जहाँ पर एक-दूसरे को शरिके हयात का अहसास रहता है इसलिये मैंने शायरी में ऐसे शब्दों को काम में लिया है जैसे सुहाग का सिन्दूर, करवा चौथ का व्रत, वरमाला, सात फेरे, सात वचन, सुहाग की सेज, घर परिवार, रस्मो रिवाज़ के बन्धन जो कि एक शादीशुदा ज़िन्दगी में ही यह सब कुछ होता है। निर्मल और पवित्र प्यार अजर और अमर मुहब्बत का मक़सद ऐसा होना चाहिये जिसमें शरीके हयात के ऐतबार, अहसास, जज़्बात, ज़रूरतों,

परेशानियों, मज़बूरियों और बेबसी के मुक़म्मल तसव्वुर दिलो-दिमाग़ में रहे और मुहब्बत जन्मों-जन्मों के लिये सात फेरों के बन्धन में बन्धने को बेहद बेताबी और बेसब्री से बेहद बेचैन और बेक़रार रहे। ख़ुदा ख़ैर करे कि मुहब्बत का यह सफ़र ज़िन्दगी के इस मुकाम पर हर हालात में ज़रूर पहुँचे जहाँ पर दो बदन एक जान हो जाते हैं और दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं।

वैसे रूमानियत शायरी करना मुश्क़िल है। महफ़िल में सुनाना और दीवान की शक़्ल देना तो और भी बेहद मुश्क़िल है। रूमानियत सुख़नवर को जिस नज़र से देखा जाता है वह शख़्सियत अच्छी नहीं मानी जाती है फिर भी मैं यह नादान ग़ुस्ताख़ी कर ख़तरा मोल ले रहा हूँ। उम्मीद है मेरी यह कोशिश आपको पसन्द आयेगी और आपके दिलो-दिमाग़ को सुक़ून मिलेगा। अपने दिली जज़्बातों से मुझे ख़बर करने की मेहरबानी ज़रूर करें। आपके जज़्बात, ख़यालात और सलाह मेरे लिये बहुत अहमियत रखती है। इन काव्य संग्रहों में कुछ ऐसा लिखने में आ गया हो और जिससे किसी के दिल और दिमाग़ को ठेस पहुँचती है तो मैं तहेदिल से माफी माँगता हूँ। यक़ीनन ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं था।

किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इसलिए रचनाओं में शब्दों व सोच का दोहराव आ गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की तमाम कोशिशें की गई है। अधिकतर रचनायें ग़ज़ल जैसी विधा में है। ग़ज़ल के तमाम शेर एक ही विषय पर हों यह ज़रूरी नहीं होता है। फिर भी एक ही विषय पर ग़ज़ल जैसी विधा में रचनायें लिखकर मैनें नई परम्परा आरम्भ की है जो कि रचना की विषय वस्तु से पूरी तरह से तालमेल रखती है। जब रचनायें एक ही विषय पर अधिक मात्रा में हो जाती हैं तो रचना संसार भी विस्तृत हो जाता हैं। तब फिर नई-नई उपमायें और प्रतीकों का सृजन होता है। मैंने बहुत सारे ऐसे शब्दों, उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है जिनकी बानगी इन रचनाओं में देखी जा सकती है। ऐसा है मेरा प्यार, महबूब का इस्तक़बाल, चाहत का चिन्तन, चाहत और क़शिश मेरे लिये, मुहब्बत मेरे लिये, प्रकृति और प्यार, बेबस दिल की पुकार, विरह की वेदना, क्या यह मुमक़िन होगा, शजर का फलसफ़ा, महबूब का तसव्वुर और मुहब्बत के सुबूत। अमूमन रूमानियत शायरी में ऐसा होता

नहीं है। उम्मीद है कि इन रचनाओं में इन उपमाओं से कुछ नया ज़रूर लगेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे। हो सकता है भविष्य में यह रचनायें रूमानियत शायरी के सन्दर्भ में आम आदमी के लिये चर्चा का विषय बन जाये।

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है, मेरी यह आरजू और मन्नत भी नहीं है कि, मेरी शायरी इल्मी अदब की महफ़िलों में शायरों के लिए मयार (उच्चस्तर) की हो व बज़्म में पायेदार (सम्मान-जनक) भी हो। तमाम शायर मेरी शायरी पर तबादला-ए-ख़याल (विचार-विमर्श) कर अपना बेशक़ीमती वक़्त बर्बाद करें। मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा (प्रार्थना) और ख़ुदा से ताहीर (निर्मल) और पाक़ दुआ है कि मेरी शायरी में मेरे महबूब के निर्मल व पवित्र अहसास, हसीन व ख़ूबसूरत जज़्बात, ख़्वाब व ख़याल, यादें व मुलाक़ातें, दिल का ऐतबार, क़रार व इन्तज़ार, पाक़ दुआयें, चैन व सुक़ून, दास्तान व अरमान, आराधना व साधना, दिल की पुकार, विरह की वेदना, मधुर-मिलन, शजर का चिन्तन, दीदार व मिलन, त्यौहार व परिवार, रोम-रोम का आभास, तन-मन का विश्वास यानि मेरे महबूब के तन-मन के सम्पूर्ण संसार के सिवाय कुछ नहीं हो।

विस्तृत अर्थों और सन्दर्भों में मुहब्बत महज़ एक ख़याल और तसव्वुर नहीं है। हज़ारों सालों का इतिहास ग़वाह है कि प्यार की वज़ह से वो भी मुमक़िन हो गया जो बेहद नामुमक़िन था। हक़ीक़त और यथार्थ में कोई पारिवारिक और सामाजिक बन्धन में बन्धकर नर्क से भी बदतर ज़िन्दगी को जी रहा है। यदि उसे महज़ तसव्वुर में अपने महबूब से हसीन मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास हो जाता है और अपना नर्क से भी बदतर जीवन जन्नत से भी बेहतर लगता है और अपना तन-मन, रोम-रोम और दिलो दिमाग़ इतना ख़ुशगवार लगता है कि जैसे सावन और बसन्त के मधुमास में गुलशन हरियाली और ख़ुश्बूओं से महक कर आबाद रहता है। मैं तो इन ख़यालात को किसी भी प्रकार से ग़लत नहीं समझता हूँ और मुहब्बत को अक़ीदत (श्रद्धा) समझकर इबादत (पूजा) करता हूँ।

'क्या यह मुमक़िन होगा' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार की वज़ह से जो हालात तन-मन, दिल और दिमाग़, रोम-रोम और अपनी ज़िन्दगी पर जो बेहद गहरा असर होता है वह कैसे ख़त्म हो सकता है उनको बयान करने की कोशिश की है।

महबूब का इस्तक़बाल (स्वागत) शीर्षक से जो रचनायें है वह फ़िल्मी गीत 'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' से प्रेरित है जिसमें यह लिखने की कोशिश की है जब महबूब प्रथम मधुर मिलन के लिये आता है उसके स्वागत में लिखी गई रचनाएँ हैं जिसमें महबूब के स्वागत में अनेक तरह के दिली जज़्बात, अहसास, सारी की सारी कायनात से इसरार और निवेदन, अभिनन्दन और अभिवादन तहरीर किये गये हैं। 'ऐसा है मेरा प्यार' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार को कई तरह से उन उपमाओं से परिभाषित किया गया है जो दैनिक जीवन में काम आती है। इन रचनाओं में आधुनिक परिवेश की परम्परागत परिवेश से तुलना कर प्यार के अहसास और जज़्बात को अनूठा और निराला बनाये रखने की दिली ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं। और भी बहुत सारी रचनायें है जो एक ही विषय वस्तु पर एक ही शीर्षक पर अलग-अलग तरह से बहुत बार लिखी गई है ताकि उस विषय वस्तु का सम्पूर्ण वर्णन किया जा सके। बेबस दिल की पुकार, मधुर मिलन, मन की मुरादें, महबूब का अक़्स, मुहब्ब्त का अहसास, मिलन की मन्नतें, महबूब का तसव्वुर, आदि तवील रचनायें है जिसमें मुहब्बत की दास्तान को मुक़म्मिल तौर पर तहरीर किया गया है। महबूब का तसव्वुर रचना में महबूब को माँ, पत्नी, बहन, दोस्त,औरत, बेटी और महबूब के तसव्वुर में ख़याल किया गया है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और गलतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर अपने दिली जज़्बात और अहसास को अपने महबूब से गुफ़्तगू के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुकून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैग़ाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मिल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु',श्री रामेश्वर शर्मा' रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर

अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी गुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

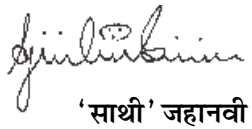

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी की मुहब्बत का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

दास्ताने-दीवान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

आपके निर्मल व पवित्र अहसास का ख़ुमार है
जिसमें मेरा दिल और दिमाग़ तो गिरफ़्तार है
मेरा रोम-रोम आपके बिना बेचैन औ बेक़रार है
मिलन में साथ गुज़रा वक़्त हर पल यादगार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत में शजर का फलसफ़ा है
हर हालात में मुहब्बत से वफ़ा है
फिर चाहे सारी कायनात ख़फ़ा है
बिना आपके ज़िन्दगी से जफ़ा है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे दिल की तो बस एक यह ही पुकार है
मधुर मिलन को दिल बेताब और बेक़रार है
तमाम उम्र के लिए आपका हमेशा इंतज़ार है
जन्मों-जन्मों तक साथ निभाने का क़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे तन औ मन में जो भी संसार है
सिर्फ़ और सिर्फ़ आपका ही प्यार है
मन की वीणा में प्रेम धुन बेशुमार है
दिलो दिमाग़ में चाहत का ख़ुमार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

तन्हाइयों में विरह की ऐसी वेदना है
मन में मधुर मुलाक़ात की कामना है
दो तन एक जान होने की भावना है
एक दूसरे के अहसास का आईना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत के तसव्वुर ऐसे बेज़ुबान है
मुहब्बत की ख़ुशियों के अरमान है
मुहब्बत ख़ुदा का प्यारा वरदान है
मुहब्बत का ज़माने में स्वाभिमान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

घर औ परिवार की दिल में साधना है
अजर और अमर होने की आराधना है
मुहब्बत ख़ुदा की पूजा औ उपासना है
महबूब की ख़ुशहाली की मनोकामना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यह सब कुछ ही मेरे दीवान की दास्तान है।

ऐसा क्यों होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत में ऐसा क्यों होता है

करवटें बदल-बदल कर सोता है
सिसकियाँ लेकर विरह में रोता है
बेबस हो कर चैनो-सुक़ून खोता है
बेज़ान तन को लाश जैसे ढोता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा तो जीवन में सिर्फ़ तब होता है
जब उसे किसी से दिल से प्यार होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

पल-पल महबूब के अक़्स के ख़याल है
तन्हाई जुदाई में मुलाक़ात के सवाल है
दिन रात बेख़ुदी से बेहाल व बदहाल है
बिना महबूब के जीने में बेहद मलाल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे जीवन में हालात तब बेशुमार है
जब उसके दिलो-दिमाग़ में बेहिसाब प्यार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

हर वक़्त मधुर मिलन का बेसब्र इन्तज़ार है
रोम-रोम में महबूब के जज़्बात का संचार है
दिल की हर साँस में महबूब का समाचार है
तन-मन में महबूब के अहसास का प्रसार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यदि दिल में दीवानगी इतनी बरक़रार है
यक़ीनन दिल में जन्मों तक मुहब्बत का इक़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

मुहब्बत के अहसास का ज़िन्दगी हो जाना
महबूब के ख़्वाबों औ ख़यालों में खो जाना
व्याकुल विरह वेदना में तड़प कर रो जाना
यादों में बेख़बर औ बेसुद होकर सो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तन औ मन के ऐसे हालात है तो
दिल में चाहत और क़शिश बेक़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

मन की मुरादों में मधुर प्यार की मुलाक़ातें हैं
नागिन की तरह से ढसती हुई काली रातें हैं
तारे गिन-गिन कर ख़्वाबो-ख़यालों में बातें हैं
ख़्वाहिशों में जीवन-साथी होने के जगरातें हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिन और रात में ऐसे मन्ज़र हैं तो
रोम-रोम में निर्मल प्यार का इज़हार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

बिना पानी मछली सा तड़पता बदन है
दिल की आहों में शोलों जैसी अगन है
दिल दीदारेयार के ख़यालों में मगन है
तन व मन में विरह वेदना की जलन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अंग-अंग के ऐसे बेरहम हालात है तो
जीवन में सिर्फ़ व सिर्फ़ प्यार का संचार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़िन्दगी में ऐसा क्यों होता है

साँसों में सिर्फ़ महबूब ही धड़कन है
दिलो-दिमाग़ में मुहब्बत का बंधन है
हमेशा ख़यालों में प्यार का चिंतन है
मुहब्बत के परिवार होने का मंथन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब अहसास के ऐसे हालात है तो
जज़्बातों में प्यार ही घर और परिवार है।

महबूब का ऐतबार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने निर्मल दिल और दिमाग़ में
हमेशा ऐसी समझदारी बनाये रखना

मुमक़िन न हो अगर चिराग़े-मुहब्बत को जलाये रखना
यादों के जुगनुओं को ख़यालातों में झिलमिलाये रखना
काली रात में भी नूर से मिलन की आस लगाये रखना
भूली बिसरी मुलाक़ातें तारों के जैसे टिम-टिमाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने पवित्र तन और मन में
हमेशा ऐसा ऐतबार बनाये रखना

प्यार में क़शिश औ मिलन की लौ जलाये रखना
जोश और जुनून का नूर दिल को दिखाये रखना
अहसास और जज़्बात के रोग़न को बनाये रखना
दीया औ बाती के पाक़ रिश्ते को समझाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने दिलो-दिमाग़ और तन-मन में
ऐसी समझदारी और ऐतबार बनाये रखना।

महबूब का अहसास : एक

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझको
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है
क्योंकि मेरे पास आपका निर्मल तन है
आपके निर्मल औ ख़ूबसूरत तसव्वुर में
आपके परियों जैसे ख़ूबसूरत बदन से
ख़ुश्बू से महका गुलशन नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझको
बेहद सुन्दर औ हसीन नज़र आती है
कयोंकि सुनहरी आभा लिये गालों में
मुझे शान्त, पवित्र और निर्मल झील में
एक खिला हुआ कमल नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझ को
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है
क्योंकि आपके तन पे सतरंगी चूनर में
बेशुमार झिलमिलाते तारों-सितारों का
ख़ूबसूरत रंगीन आकाश नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझ को
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है
क्योंकि आपकी नागिन जैसी बलखाती
अमावस के रात जैसी घनेरी जुल्फ़ों में
पुरवाई घटाओं का अक़्स नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझ को
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है
क्योंकि मेरे पास आपका निर्मल मन है
आपके निर्मल और ख़ूबसूरत तसव्वुर में
आपकी गहरी झील सी नीली आँखों में
चाहत व क़शिश की हिलोरें लेता हुआ
गहरी मुहब्बत का सागर नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इसलिये मुझको
बेहद सुंदर व हसीन नज़र आती है
क्योंकि स्वर्णिम आभा लिये चेहरे में
सुहावनी सुबह के वक़्त की तरह से
उगता हुआ आफ़ताब नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इसलिये मुझ को
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है
क्योंकि मेरे पास आपका पवित्र बदन है
गुलाबी रंगत के रसीले व मधुर होठों में
हसीं तबस्सुम का नज़ारा नज़र आता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सारी कायनात इस लिये मुझको
बेहद सुन्दर और हसीन नज़र आती है।

महबूब का अहसास : दो

मेरे महबूब के निर्मल दिल और दिमाग़ में

मेरे सारे के सारे जीवन के लिये विश्वास है
जीवन-साथी बने रहने का सम्पूर्ण आभास है
जिसके ख़यालों में मधुर मिलन का प्रवास है
जिसके मन में ख़ूबसूरत प्यार का अहसास है

ऐसा मेरा निर्मल व पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का सम्पूर्ण संसार है
जिससे मेरी ज़िन्दगी में ख़ूबसूरत बहार है

मेरे महबूब के पवित्र तन और मन में

मेरे बुरे वक़्त में मेरी ज़रूरतों के जज़्बात हैं
मेरी परेशानियों के लिये मन में सवालात हैं
मेरे तन-मन के अहसास उसकी कायनात है
मेरे बिना उसकी हसीन ज़िंदगी हवालात है

ऐसा मेरा निर्मल व पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का सम्पूर्ण संसार है
जिससे मेरी ज़िन्दगी में ख़ूबसूरत ऐतबार है

मेरे महबूब के निर्मल ख़्वाबों और ख़यालों में

जिसकी आँखों में साजन का इन्तज़ार है
विचलित विरह की वेदनाओं में बेक़रार है
दिल की ख़्वाहिशों में मिलन की पुकार है
जन्मों-जन्मों में मुहब्बत के लिए ऐतबार है

ऐसा मेरा निर्मल व पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का सम्पूर्ण संसार है
जिससे मेरी ज़िन्दगी में ख़ूबसूरत इसरार है

मेरे महबूब के निर्मल दिल और दिमाग़ में

जिसके ख़्वाबों में हसीन सपनों का मकान है
जिस के अंग-अंग में मेरे अहसास के अरमान
मेरी मुहब्बत उसके दिल में दीन औ ईमान है
जिसके मन में घर व परिवार के लिए अजान

ऐसा मेरा निर्मल व पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का सम्पूर्ण संसार है
जिससे मेरी ज़िन्दगी में ख़ूबसूरत बहार है।

मुहब्बत के सुबूत : एक

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी का चेहरा आँखों में क़ैद हो जाना
किसी की हसीन यादों में बेसुध हो जाना
किसी का साथ मंजिले मक़सूद हो जाना
किसी का रोम-रोम में ही वजूद हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत का ख़ुमार कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी की सीरत में साथी का ख़्याल हो जाना
किसी की गुफ़्तगू ख़ूबसूरत मुलाक़ात हो जाना
किसी की सूरत का हसीन सुबह व शाम हो जाना
किसी की आवाज़ का दिल में अजान हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही क़शिश की तासीर कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी का दुआओं में दिल की तमन्ना हो जाना
किसी का विचार तन-मन में आराधना हो जाना
किसी की ख़ुशी के लिये दिली साधना हो जाना
किसी का साथ ज़िन्दगी की उपासना हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत में इबादत कहते हैं

किसी से मधुर मिलन मन का मीत हो जाना
किसी का अहसास मन का संगीत हो जाना
किसी के ख़्वाबो ख़याल मधुर गीत हो जाना
किसी के जज़्बात का मन की प्रीत हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही प्यार का अफ़साना कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी की मधुर मुस्कान का मन की रीत हो जाना
किसी की हार दिल से मुहब्बत की जीत हो जाना
किसी की यादों का तन-मन से परिचित हो जाना
किसी की विरह की वेदनाओं में विचलित हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत में दीवानगी कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी का ख़याल दिल धड़कने का वजूद हो जाना
किसी की सूरत दिन और रात का सुक़ून हो जाना
किसी का चेहरा चाँद व सूरज का सुबूत हो जाना
किसी की चाहत का हम सफ़र में क़ुबूल हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत का फलसफ़ा कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी का अक़्स ख़याल में शुमार हो जाना
किसी से मिलने के लिए बेक़रार हो जाना
किसी का दीदार दिल की पुकार हो जाना
किसी का अहसास तन में ख़ुमार हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही चाहत का क़रार कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

किसी का मन्नतों में आख़िरी ख़्वाहिश हो जाना
किसी का दिल में चाहत और क़शिश हो जाना
किसी का अंग-अंग में हसीन समावेश हो जाना
किसी का चेहरा ज़िन्दगानी में प्रकाश हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही प्यार का चिन्तन कहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

यक़ीनन इसको ही चाहत का क़रार कहते हैं
यक़ीनन इसको ही प्यार का चिन्तन कहते हैं
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत में इबादत कहते हैं
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत का ख़ुमार कहते हैं
यक़ीनन इसको ही क़शिश की तासीर कहते हैं
यक़ीनन इसको ही प्यार का अफ़साना कहते हैं
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत में दीवानगी कहते हैं
यक़ीनन इसको ही मुहब्बत का फलसफ़ा कहते हैं।

मुहब्बत के सुबूत : दो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल और दिमाग़
तन व मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी अजनबी की सूरत पे इत्मीनान हो जाना
उस की दीवानगी में दिल का नादान हो जाना
आशियाँ उस की यादों का ही मकान हो जाना
तन-मन में उस के अक़्स का निशान हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन ऐसे बेसुध हालात को ही तो
बेशुमार मुहब्बत का पाग़लपन कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल और दिमाग़
ख़्वाबो ख़यालों से करो ऐसा ऐतबार

किसी की जुदाई में तड़प कर बेहाल हो जाना
उसकी याद में अश्क़ बहाकर बदहाल हो जाना
हरवक़्त ज़हन में सिर्फ़ उसका सवाल हो जाना
दिलो-दिमाग़ में हर पल उसका ख़याल हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन ऐसे तन्हाई के लम्हों को ही
मुहब्बत का निर्मल फलसफ़ा कहते है 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल व दिमाग़
अंग-अंग से करो ऐसा ऐतबार

किसी से मुलाक़ातें और गुफ़्तगू लाज़वाब हो जाना
उससे मिलने की आरज़ू औ तमन्ना ख़्वाब हो जाना
ताउम्र के सारे सवालों का एक ही जवाब हो जाना
सुख़नवर की शायरी का मुक़म्मल किताब हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही तो मुहब्बत में
बेहिसाब चाहत की दीवानगी कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल व दिमाग़
रोम रोम से करो ऐसा ऐतबार

किसी अजनबी की सूरत पे इत्मीनान हो जाना
उसकी दीवानगी में दिल का नादान हो जाना
आशियाँ उसकी यादों का ही सामान हो जाना
तन-मन में उसके अक़्स का निशान हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही तो मुहब्बत का
बेशुमार प्यार का पाग़लपन कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेक़रार दिल और दिमाग़
तन और मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी के लिये तन-मन से बेहद लाचार हो जाना
अपने आप से भी बेख़ुदी में बेहद बेज़ार हो जाना
दामन दर्द व ग़म से आबाद एक बाज़ार हो जाना
तन्हाई व जुदाई में बहते अश्क़ ही संसार हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन ऐसे बदहाल जीवन को ही
पाक़ मुहब्बत के अलामत कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेक़रार दिल और दिमाग़
तन और मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी के बदन पर अश्क़ों की जलन तेजाब हो जाना
विरह की व्याकुल वेदना में तड़प कर बेताब हो जाना
बेख़ुदी में उसके ख़याल ही दिल में बेहिसाब हो जाना
रस्मों और रिवाज़ के बन्धन तोड़कर बेनक़ाब हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन ऐसे जुल्मो सितम को ही तो
पाक़ मुहब्बत की रिवायतें कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेक़रार दिल और दिमाग़
तन और मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी का दिली तसव्वुर में इबादत हो जाना
उसकी यादों का आशियाँ ज़ियारत हो जाना
उसके लिए सारे ज़माने से अदावत हो जाना
ख़ास अपनों से उसके लिए बग़ावत हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही तो चाहत का
पाक़ और ताहीर फलसफ़ा कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेक़रार दिल और दिमाग़
तन और मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी का ख़ुदा से इबादत में वरदान हो जाना
दिल के मन्दिर में उसका ही भगवान हो जाना
ख़्वाबों औ ख़यालों में उसका अरमान हो जाना
उसकी मुहब्बत और चाहत ही ईमान हो जाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यक़ीनन इसको ही तो चाहत की
अजर और अमर तासीर कहते हैं 'साथी'।

---

1. बेख़ुदी=बेख़बर 2. बेज़ार=उदासीन 3.अलामत=प्रतीक 4. बेताब=बेचैन 5. बेनकाब=बेपर्दा (आज़ाद)
6. रिवायतें=परम्परायें।

सिर्फ़ तुम

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

सवाल कोई भी क्यों न हो
जवाब तो सिर्फ़ तुम ही हो
सफ़र कोई भी क्यों ना हो
मन्ज़िल तो सिर्फ़ तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

दुख कोई भी क्यों न हो
ख़ुशियाँ सिर्फ़ तुम ही हो
दर्द कोई भी क्यों ना हो
दवा तो सिर्फ़ तुम ही हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

अरमाँ कोई भी क्यों ना हो
आरज़ू तो सिर्फ़ तुम ही हो
नाराज़गी कोई क्यों ना हो
मुहब्बत तो सिर्फ़ तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

ख़्वाब तो कोई भी क्यों ना हो
स्वप्न फल तो सिर्फ़ तुम ही हो
ज़िंदगी की वज़ह कोई भी हो
दिल की धड़कन तो तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

ख़याल कोई भी क्यों न हो
तसव्वुर में सिर्फ़ तुम ही हो
बेचैनी कैसी भी क्यों न हो
चैनो सुक़ून सिर्फ़ तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

जुदाईयाँ तो कैसी भी क्यों ना हो
मिलन की आस सिर्फ़ तुम ही हो
वर्ष के महीने कोई भी क्यों न हो
सावन के मधुमास सिर्फ़ तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

मौसम ऋतुयें कोई भी क्यों न हो
बसन्त की बहार सिर्फ़ तुम ही हो
ज़िन्दगी में जन्म कोई क्यों न हो
हर जन्म में जीवनसाथी तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

ख़्वाहिशें तो कोई भी क्यों न हो
आख़िरी ख़्वाहिश सिर्फ़ तुम्हीं हो
दिन व रात कोई भी क्यों न हो
हर-पल के अहसास तुम ही हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह!मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

सुबह व शाम कोई भी क्यूँ न हो
चाँद और सूरज सिर्फ़ तुम ही हो
तीज-त्यौहार कोई भी क्यों न हो
होली व दीपावली तो तुम ही हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

रंगों की रंगत कोई भी क्यों न हो
सात रंगों का अहसास तुम ही हो
सुर व संगीत कोई भी क्यों न हो
मन की वीणा तो सिर्फ़ तुम ही हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

प्रार्थना उपासना कोई भी क्यों न हो
मन की आराधना तो सिर्फ़ तुम्हीं हो
दुआयें व मन्नत कोई भी क्यों न हो
दिल औ दिमाग़ की पुकार तुम्हीं हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार

ख़ुदा व पैग़ंबर कोई भी क्यों न हो
ज़िन्दगी में ख़ुदाई सिर्फ़ तुम ही हो
वचन व बन्धन कोई भी क्यों न हो
सात वचन के बंधन तो तुम ही हो

मैं भी ग़लत हूँ
तुम भी ग़लत हो
और मैं भी सही हूँ
और तुम भी सही हो
फिर भी ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे सब कुछ तो सिर्फ़ तुम ही हो
मेरे सब कुछ तो सिर्फ़ तुम ही हो।

मधुर मिलन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्रथम मधुर मिलन का मन में हसीन अहसास था
पहले से भी ज़्यादा दिलो-दिमाग़ में विश्वास था
तन और मन में ख़ूबसूरत प्यार का मधु मास था
रोम-रोम व अंग-अंग में एक दूजे का निवास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़माने से बेख़बर हमारे हसीन प्यार का संसार था
सिर्फ़ और सिर्फ़ एक दूजे में समाने का विचार था
एक दूजे के जज़्बात पे दिल दिमाग़ से ऐतबार था
बेसब्र व बेताब होकर मधुर मिलन का इन्तज़ार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अधूरी ख़्वाहिशों को पूरा करने का मन से प्रयास था
यादगार प्रथम मधुर मिलन का तन-मन में प्रवास था
रोम-रोम में प्रेम रस का हसीन और मधुर प्रसार था
हमारे अंग-अंग से हसीन प्यार का बेफ़िक्र प्रचार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे की ख़ुशियों के लिये तन और मन से कुर्बान था
प्यार का रिश्ता ही हमारे दिल औ दिमाग़ में संविधान था
मधुर मिलन का वक़्त हमारे लिये सबसे हसीन जहान था
दिल व दिमाग़ में मधुर प्यार का अहसास दीनो-ईमान था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन और मन शान्त व निर्मल होने को बेक़रार था
गिले व शिक़वे ख़त्म करने का दिल में क़रार था
एक-दूजे के दुख व सुख का मन में समाचार था
शिक़ायतों में भी अपनेपन का सम्पूर्ण अधिकार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारा आशियाना सुन्दर व हसीन ख़ूबसूरत उपवन था
मुहब्बत की मधुर मुलाक़ातों से महकता मन मधुबन था
रोम-रोम और अंग अंग की ख़ुश्बू से आबाद चमन था
ख़ूबसूरत प्यार की मस्ती में मस्त हमारा तन व मन था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जीवन-साथी होने का निर्मल औ पवित्र अहसास था
घर और परिवार के जज़्बातों का सम्पूर्ण आभास था
एक-दूजे के दिल में प्यार के रिश्ते का विश्वास था
साथ वचनों में बन्ध कर दिलो दिमाग़ में निवास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे के दिलों में प्यार का मान और सम्मान था
अजर और अमर प्यार के रिश्ते पर हमें अभिमान था
जन्मों-जन्मों के लिए साथ निभाने का इत्मीनान था
मधुर मनुहार से प्यार का तन-मन में स्वाभिमान था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मन की वीणा में प्रेम रस की मधुर धुन का संगीत था
एक-दूजे के होठों पर निर्मल पवित्र प्यार का गीत था
रोम-रोम में प्यार का अहसास तन व मन का मीत था
दिल व दिमाग़ एक दूजे के विश्वास से प्रसन्नचित्त था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारे निर्मल व पवित्र मधुर मिलन में
ऐसा हसीन और ख़ूबसूरत मधुर प्यार था।

मन की मुराद

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हम दोनों का मुक़ाम एक शहर हो जाये
सुहावनी चाँदनी रातों की सहर हो जाये
एकदूजे की हसीं बाँहों में बसर हो जाये
घर औ परिवार में अपनी गुज़र हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे प्यार का फलसफ़ा एक शजर है
जो निर्मल और पवित्र हो कर अमर है
वफ़ा और ऐतबार मुहब्बत का जेवर है
जो शिक़वे औ शिक़ायतों से बेख़बर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारी मुहब्बत में इन्सानियत का धरम है
एक दूजे की चाहत-क़शिश का करम है
दो बदन एक जान हो जाने का भरम है
मुहब्बत के लिये दीनो ईमान का रहम है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आसमान के सितारों की तरह प्यार बेशुमार है
समन्दर में पानी की तरह से बेहिसाब प्यार है
मन में पल-पल बजती प्रेम धुन की सितार है
दिलो-दिमाग़ में सावन के मौसम की बहार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन और मन में सावन का पावन सोमवार है
दिल औ दिमाग़ में करवाचौथ का त्यौहार है
एक दूसरे के हाथों में वरमाला का क़रार है
ख़यालों में एक दूजे की वफ़ा का ऐतबार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत हमारे लिये दिल से इबादत है
प्यार का सफ़र ज़िन्दगी में ज़ियारत है
एक-दूजे की ज़रूरतों की हिफ़ाज़त है
अहसासों से मुहब्बत ही इन्सानियत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़माने की दुनियादारी से बेख़बर हमारा प्यार है
हमारे निर्मल और पवित्र प्यार में घर-परिवार है
मुहब्बत ही दीन औ ईमान ऐसा हमारा संसार है
मुसीबत के हर हाल में साथ निभाने का क़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत के लिये तन-मन में ऐसा सवाल है
मुहब्बत के बिना हमारी ज़िन्दगी बदहाल है
एक दूजे के बिना दिल व दिमाग़ बेहाल है
एक दूजे का दीदार रोम रोम का ज़माल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी मुहब्बत में ऐसा असर हो जाये
ख़ुदा को हमारी दुआओं की ख़बर हो जाये
हमारे मन की मुरादें और मन्नतें पूरी हो जाये
हमारी मुहब्बत ख़ुशहाल घर और परिवार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

महबूब का अक़्स

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त ख़ूबसूरत लगते हो

जब तुम सोलह शृंगार से सँवरकर
चाँदनी रात में सुहाग की सेज पर
मेरा बेक़रारी से इन्तज़ार करते हो
उस वक़्त तुम्हारा ये हसीन चेहरा
उगते सूरज की लालिमा लिये हुये
सुन्दर औ सुनहरा कुंदन लगता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त ख़ूबसूरत लगते हो

तुम्हारे रूख़सार पे गुलाब के फूलों की
गुलाबी रंगत और आभा नज़र आती है
झील सी तुम्हारी शांत औ नीली आँखें
खिलते हुये कमल जैसी नज़र आती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त भी ख़ूबसूरत लगते हो

जब तुम्हारा मखमली रेशमी ये तन
संगमरमर को करीने से तराशी हुई
एक बोलती हुई मूरत सा लगता है
मन मोहक मादकता लिये हुये हसीं
तुम्हारा निर्मल औ पवित्र, तन व मन
महकते चमन का आभास कराता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त ख़ूबसूरत लगते हो

तुम्हारे नशीले और रसीले यह लब
ख़ुमो सागर का अहसास कराते हैं
तुम्हारी लहराती घनी काली ज़ुल्फ़ें
सावन में काली घटा सी लगती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ख़ूबसूरत नज़र आते हो

जब निर्मल व पवित्र प्रेम में
दो बदन एक जान हो कर
रूह से रूह के मिलन का
रूहानी अहसास कराते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ख़ूबसूरत नज़र आते हो

बेख़ुदी के आलम में ऐसे बेख़बर होकर
हर-पल मेरे अक़्स का दीदार करते हो
अपने मन को शान्त व निर्मल बना कर
अपने प्यार को अजर व अमर मान कर
अपनी मुहब्बत के क़ुदरती अहसास को
जन्मों-जन्मों के लिये स्वीकार करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ख़ूबसूरत नज़र आते हो

जब मुहब्बत को मन से आराधना
और ईश्वर की साधना समझ कर
दरवेश की तरह इबादत करते हो
प्यार को पाक़ ज़ियारत समझकर
प्यार को पवित्र वरदान मानते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ख़ूबसूरत नज़र आते हो

मुहब्बत की ख़ुशहाली व हिफ़ाज़त के लिए
ख़ुदा से दिली दुआयें औ मिन्नतें करते हो
अपने मन की मुरादें और मन्नतें दफ़्न कर
आख़िरी ख़्वाहिश में फ़क़त प्यार माँगते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ख़ूबसूरत नज़र आते हो

तन-मन को शान्त व निर्मल बना कर
प्यार में चैनो-सुकून महसूस कराते हो
जब अपने निर्मल दिल और दिमाग़ में
घर औ परिवार का अहसास करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

अपने सच होते हुये ख़्वाबों की ताबीर में
परिवार की ख़ुशहाली की बात करते हो
अपने दिल में तहज़ीब और सफ़ाकत से
बुज़ुर्गों की दुआओं से एहतराम पाते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

शिक्षा और संस्कार का मन्थन कर के
बच्चों के भविष्य का चिन्तन करते हो
अपने निर्मल और पवित्र मन मंदिर में
प्रेम व ममता की मूरत नज़र आते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

जब तन औ मन में ख़ुशगवार और
हसीन मौसम के अहसास के साथ
हरियाले और सतरंगी बसन्त जैसी
ख़ुश्बू और बहार की बात करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

तसव्वुर और ख़यालों के चिन्तन में
चैन और सुकून की बात करते हो
दिल में उत्साह औ उमंग के साथ
होली, दिवाली के त्यौहार मनाते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

तन-मन में श्रद्धा व विश्वास के साथ
करवाचौथ औ सावन के सोमवार का
पवित्र और निर्जल उपवास करते हो
औ अपने तन-मन को शुद्ध करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
उस वक़्त भी मुझको हसीन व
और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगते हो

जब तुम सारे ज़माने के लिए
इंसानियत की बातें करते हो
सारे के सारे संसार के लिये
ख़ुशहाली में विचार करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

क़ुदरत के हर जीव व ज़र्रे ज़र्रे में
अपने प्राणों का संचार समझते हो
हवा और पानी का जीवन जीकर
हर प्राणी की भूख और प्यास का
दिल से दर्द और मर्म समझते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

शजर की फ़ितरत व रंगत से
सारी कायनात औ क़ुदरत पर
हवा व पानी की तरह बनकर
पवित्र अहसान नज़र आते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

हमदर्दी के दो बोल बोल कर
डूबते हुये को एक तिनके का
मज़बूत सहारा नज़र आते हो
नेकी को दरिया में डाल कर
लाचार के मददगार बनते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

समाज की रूपरेखा को समझकर
कुरूतियों को दूर करने के लिये
तन और मन से प्रयास करते हो
आरक्षण का विकृत रूप देखकर
जाति-प्रथा पर मन्थन करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

जब वतन और सरहद की हिफ़ाज़त में
आतंकवाद की समस्या पे विचार करके
जान कुर्बान करने के जज़्बात रखते हो
इस तरह वतन को महफ़ूज़ करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

अफ़सरों की रिश्वत, लालफीता शाही के
सरकारी बदइन्तज़ाम हाल को देखकर
कुप्रबन्धन पर अफ़सोस व्यक्त करते हो
सरकारी अव्यवस्था पर चिंतन करते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम उस वक़्त सबसे ज्यादा
हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

दलबदलू और घोटाले की गंदी राजनीति से
बेबस होकर हैरान व परेशान नज़र आते हो
छेड़खानी, लूट व बलात्कार की घटनाओं पर
दिल औ दिमाग़ से रोते हुये नज़र आते हो
चोरी, लूटखसोट और हत्याओं को देखकर
पुलिस के हालात पे चिन्तित नज़र आते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये इस वक़्त सबसे ज्यादा
ज़हीन, हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये इस वक़्त सबसे ज्यादा
ज़हीन, हसीन और ख़ूबसूरत लगते हो।

मुहब्बत के सुबूत : तीन

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे रोम-रोम का अहसास होकर
मेरे तन औ मन में समाये हुये हो
दो बदन एक जान हो कर ही तो
मेरे अंग अंग में ही समाये हुये हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिमाग़ के बेख़याल तसव्वुर होकर
मेरे ख़यालों में तुम समाये हुये हो
जीवन साथी के फलसफ़ा हो कर
ज़िन्दगी में हमसफ़र बनाये हुये हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर मुलाक़ात की यादों में होकर
दिन और रात ख़ुद जगाया हुआ है
चाँदनी रातों में बेचैन, बेताब होकर
सुहाग की सेज को सजाया हुआ है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

निर्मल प्यार का विश्वास होकर
ख़्वाबों की ताबीर बनाया हुआ है
हरियाला सतरंगी सावन हो कर
बसन्त का मौसम बनाया हुआ है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रस्मों और रिवाज़ों का बन्धन हो कर
होली दीवाली का पर्व बनाया हुआ है
जीवन की खुशियाँ औ उमंग हो कर
घर-परिवार में आधार बनाया हुआ है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इसलिए मुझे ये कहने में
कोई घबराहट नहीं होती
मुझे कुछ क़ुबूल करने में
कोई भी डर नहीं लगता

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुझको यह इक़रार करने में
कोई भी शर्म नहीं आती कि
तुम्हीं तो मेरे मधुर-प्यार हो
तन-मन के संपूर्ण संसार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इसलिये दिल की गहराईयों से
यह ख़्वाहिश औ इज़हार है कि
मुझे तुमसे इतना सारा प्यार है
जैसे समन्दर में अथाह पानी है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मुझे तुम से इतना बेशुमार प्यार है

जैसे नील गगन में अनगिनत सितारे हैं
जैसे संसार में चाँद-सूरज का वजूद है
जैसे सावन में हरियाली ही हरियाली है
जैसे चमन में आबाद फूलों की ख़ुश्बू है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मुझे तुम से इतना बेशुमार प्यार है

जैसे महकते बसन्ती फूलों की क्यारी है
जैसे ज़िन्दगानी में शज़र का चिन्तन है
जैसे निर्मल पवित्र दुआओं में ऐतबार है
जैसे ईश्वर की आराधना व उपासना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

मिलन की मन्नत

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर मिलन की फिर वही बेला आई है
तन और मन में प्यार की मस्ती छाई है
अधूरी ख़्वाहिशों ने साकार सोच पाई है
सपने को सच करने की कसम निभाई है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बसन्त औ सावन जैसा मधुमास है
रोम-रोम में प्रेम रस का प्रवास है
एक-दूजे को ख़ूबसूरत अहसास है
तन-मन निर्मल करने का प्रयास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन-मन में जीवन-साथी का विचार है
दिल व दिमाग़ में रिश्ते का ऐतबार है
सारा जीवन साथ निभाने का क़रार है
वादों औ इरादों में प्यार का इक़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अंग-अंग बेकरार और बेताब है
तन-मन खिलता हुआ गुलाब है
रोम-रोम में प्यार का शबाब है
आँखों में मदहोशी की शराब है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन औ मन में प्रेम की अगन है
इशारों में एक-दूजे को नमन है
हसीन ख़यालों में दोनों मगन है
एक-दूसरे की बाँहों में शयन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल औ दिमाग़ बेताब, बेचैन और बेक़रार है
आँखों में मधुर मिलन का बेसब्र इन्तज़ार है
विरह की व्याकुल वेदना दिल में बेशुमार है
रोम-रोम में प्यार का क़रार और इज़हार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन और मन में प्यार का सागर उफान पर है
दिलो-दिमाग़ में विरह की लहरें तूफ़ान पर है
दोबदन एकजान होने का मिलन ज़ुबान पर है
बिना महबूब के यह ज़िंदगी अब क़ुर्बान पर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ख़्वाबों औ ख़यालों में हसीन मुलाक़ातों का चिन्तन है
तन औ मन को शान्त और निर्मल करने का मन्थन है
रोम-रोम के अहसास में प्यार की ख़ुश्बू का चन्दन है
एक-दूजे में समाने के लिये हसीन बाँहों का बन्धन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जुदाई में तन और मन बर्फ़ की तरह से पिघल रहा है
प्यार तूफ़ानी दरिया के पानी की तरह से मचल रहा है
विरह की व्याकुल वेदना में दिल व दिमाग़ जल रहा है
चाहत व क़शिश का लावा भूकम्प के जैसे उबल रहा है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल औ दिमाग़ में कायम है वैसा ही ऐतबार
एक-दूजे में समाने को तन व मन है बेक़रार
बेसब्र व बेचैन होकर है एक-दूजे का इन्तज़ार
पल-पल में है एक-दूजे के आने का समाचार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे बेचैन, बेताब व बेक़रार
तन और मन में समा जाओ।

महबूब का तसव्वुर

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुहावनी सुबह के वक़्त में उगता हुआ आफ़ताब है
पूनम की शीतल चाँदनी रातों में रोशन माहताब है
आसमान पर पुरवाई घटाओं का घनघोर हिज़ाब है
महकता हुआ गुलशन बसंत व सावन का जवाब है

जब जहान में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे ख़्वाबों और ख़यालों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दरवेश की ईश्वर के लिये उपासना है
आत्मा के परमात्मा होने की साधना है
दो बदन एक जान होने की भावना है
मन मन्दिर में महबूब ही मनोकामना है

जब इबादत में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरी अक़ीदत और अहसास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

गीता में जिस तरह से कर्मयोग का ज्ञान है
महा भारत में जिस तरह कर्म का विज्ञान है
रामायण में समाज की मर्यादा का सम्मान है
सन्तों के सतसंग में ख़ुशहाली का विधान है

जब ऐसा चिंतन हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे दिल और दिमाग़ में
सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सागर में पानी की गहराई का विचार है
आसमान में झिलमिल सितारे बेशुमार हैं
कायनात में हवा व रोशनी का प्रसार है
ज़हान में अनगिनत जीवों का संसार है

जब ऐसे सवाल व जवाब हैं तो
उस वक़्त मेरे चिन्तन और मन्थन में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

नि:सन्तान माँ-बाप की औलाद के लिये तमन्ना है
शजर की कुछ लेकर सब कुछ देने की कामना है
दरिया की जल ही जीवन धारा है जैसी भावना है
इंतज़ार में पीया से मिलन के लिये विरह वेदना है

जब ऐसी दिली तमन्नायें हैं तो
उस वक़्त मेरे ख़्वाबों और ख़यालों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

संसार से सचेत शिव की सदियों तक साधना है
ध्यान में मग्न बुद्ध ही शांत व निर्मल आराधना है
अंहिसा परम धर्म के लिये महावीर की प्रार्थना है
गुरूनानक की वाणी में सद्भावना से उपासना है

जब ऐसा अहसास हो रहा है तो
उस वक़्त मेरी रूह के रोम-रोम में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

समृद्धि व ऐश्वर्य में धन की देवी लक्ष्मी का निवास है
ज्ञान और विज्ञान में माँ सरस्वती देवी का आवास है
घर की ख़ुशहाली के लिये देवी पार्वती का प्रयास है
आर्दश पत्नी में देवी सीता की साधना का आभास है

जब घर-परिवार में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे जीवन-साथी के तसव्वुर में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रानी पद्मनी के जौहर में पत्नी का दीन-ईमान है
रानी लक्ष्मी बाई की वीरता का मान औ सम्मान है
पन्ना धाय का फ़र्ज़ में अपने बच्चे का बलिदान है
हाड़ी रानी का सर देश की हिफ़ाज़त में क़ुर्बान है

जब ऐसा स्वाभिमान है तो
उस वक़्त मेरे अपने अभिमान में
सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

विरह की व्याकुल वेदना में मीरा प्रेम दीवानी है
निर्मल व पवित्र प्यार में राधा-कृष्ण की रानी है
हीर-रांझा की ज़माने में अजर-अमर कहानी है
लैला और मज़नू की मुहब्बत दिलों में ज़ुबानी है

जब प्यार की ऐसी दास्तान है तो
उस वक़्त मेरी ताउम्र की ज़िन्दगानी में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सात-सुरों के संगम से सुरीला संसार है
वीणा के संगीत में पायल जैसी झंकार है
राग और रागिनियों के साथ में सितार है
गीतों और ग़ज़लों में शायरी का मयार है

जब तन-मन में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे रोम-रोम के अहसास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मोक्ष दायनी माँ गंगा के पानी से पवित्र काया है
निर्मल नर्मदा नदी जीवन के जीने का जरिया है
यमुना में कृष्ण के बालपन की लीला व माया है
सरस्वती के संगम पर ईश्वर का पवित्र साया है

जब दरिया की रवानी में ऐसा है तो
उस वक़्त मेरे सारे जीवन के सफ़र में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सावन के महीने में हरियाला अहसास है
सतरंगी बसन्त में रंग बिरंगा मधुमास है
महकते चमन में ख़ुश्बूओं का आभास है
ख़ूबसूरत जन्नत में परियों का निवास है

जब कायनात ऐसी हसीन है तो
उस वक़्त मेरे आशियाने के आँगन में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अम्बर को छूती हिमालय जितनी ऊँचाई है
आकाश-पाताल के बीच जितनी गहराई है
समंदर के दो किनारों में जितनी चौड़ाई है
गगन में आकाश गंगा के जितनी लम्बाई है

जब यह संसार इतना अद्‌भुत है तो
उस वक़्त मेरे तसव्वुर और ख़यालातों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुहाग की सेज पर दुल्हा-दुल्हन की अंगड़ाई है
मुलाक़ातों के इन्तज़ार में बेताब आँखें पत्थराई हैं
हसीन मधुर मिलन के वक़्त जन्नत भी घबराई है
हर वक़्त साये की तरह से ख़ुद अपनी परछाई है

जब तन-मन इतना बेक़रार है तो
उस वक़्त मेरे रोम रोम के अहसास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बिना दहेज के बेबस गरीब की बेटी की सगाई है
सुनसान और विरान खण्डहरों में आबाद तन्हाई है
ख़ुद को ख़ुद से बेख़बर औ जुदा करती जुदाई है
बाबुल के आँगन से आँसू भरी दुल्हन की विदाई है

जब ऐसी मज़बूरी व लाचारी है तो
उस वक़्त मेरे हैरान व परेशान दिल में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

शुभ-विवाह के समय में बजती शगुन की शहनाई है
मुद्दत से इन्तज़ार के बाद ख़ुश ख़बर की मिठाई है
बेऔलाद माँ-बाप को अपाहिज बच्चे की भी बधाई है
विधवा ने सपनों में सुहाग की सेज पर रात बिताई है

जब ऐसी ख़ुशी का माहौल है तो
उस वक़्त मेरे तन-मन के आशियाने में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल की दुआओं में जितना चमत्कार है
मन से ईश्वर की उपासना असरदार है
दीनो-ईमान में चैनो सुक़ून की बहार है
अम्न और अमान से ख़ुशहाल संसार है

जब ऐसी निर्मल-पवित्र साधना है तो
उस वक़्त मेरी अक़ीदत और इबादत में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

साथ निभाने के लिये सात फेरों का बन्धन है
ख़ुशहाली के लिये सात वचनों का चिन्तन है
जीत कर भी हारने में वर माला का वन्दन है
कई जन्मों के लिये पवित्र रिश्ते का मंथन है

जब ऐसा इज़हार हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे क़रार और इक़रार में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

भूख से दम तोड़ते हुये को सूखी रोटी की आस है
दो बूँद पानी के लिए प्यास से तड़पते की प्यास है
असहाय बुजुर्ग माता-पिता को बच्चों पर विश्वास है
विधवा बेटी को माँ व बाप के सहयोग का प्रयास है

जब ऐसा ऐतबार हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे अहसास और आभास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मासूम बच्चों में बचपन की जिद् और शरारत है
ससुराल में बेबस बेटी पर माँ-बाप की इनायत है
भाई-बहन में एक-दूजे की ग़लतियों में शराफ़त है
दोस्ती में हँसी मज़ाक मगर फिर भी इंसानियत है

जब परिवार में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरे जीवन की दिनचर्या में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तवायफ़ों की दिली तमन्ना में घर-परिवार है
डूबते को एक तिनके का सहारा मददगार है
बलात्कार के वक़्त औरत की निर्मम पुकार है
हताश औ निराश को परमात्मा पर ऐतबार है

जब दुआओं में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरी आशा और विश्वास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

कुँआरी के सपनों में राज कुमार के अरमान है
दीन, दुखियों और बेबस की सेवा में भगवान है
माता व पिता की छत्रछाया में सारा जहान है
भक्तिभाव से ख़ुश होकर ईश्वर का वरदान है

जब तमन्नाओं में ऐसा हो रहा है तो
उस वक़्त मेरी ख़्वाहिशों और आस्था में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बह्मा, विष्णु और महेश में ही सारा संसार है
नव दुर्गा की भक्ति में शक्ति का भण्डार है
बह्माण्ड ग्रहों से आबाद तारों का परिवार है
सप्त ऋषियों के ज्ञान से दुनिया ख़ुशगवार है

जब कायनात में ऐसा चमत्कार है तो
उस वक़्त मेरे ज्ञान-विज्ञान के ख़यालों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

चाहत और क़शिश में प्रणय निवेदन स्वीकार है
आदर और सत्कार में मधुर मान और मनुहार है
बेबस और मज़बूर होकर मुहब्बत का इज़हार है
ख़ामोश निगाहों में प्यार का क़रार व इक़रार है

जब रिश्ते में ऐसे जज़्बात हैं तो
उस वक़्त मेरे रोम-रोम के अहसास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दुनियादारी से अन्जान मस्त पाग़लों का अपना संसार है
सूफी संतों का दुनियादारी से बेख़बर ख़ुदा पर ऐतबार है
मेहनत व ईमानदारी से किया गया महाजन का व्यापार है
मज़बूर बेगुनाह जब गुनहगार होकर ज़लील व शर्मसार है

जब ऐसे विचित्र हालात है तो
उस वक़्त मेरे ज़हन के तसव्वुर में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

धर्म राज युधिष्ठिर के तन-मन में धर्म है
गीता के उपदेशों में श्री कृष्ण का कर्म है
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मन में मर्म है
बेबस भीष्म पितामह के पुरुषार्थ में शर्म है

जब ऐसा चिंतन व मंथन है तो
उस वक़्त मेरे दीन और ईमान में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

शबरी के झूठे बेरों में श्रद्धा का उपहार है
अहिल्या में नारी के सम्मान का उद्धार है
केवट की चतुराई लेन-देन का सदाचार है
भरत विलाप में भाई से विरह की पुकार है

जब ऐसी करुणा के विचार है तो
उस वक़्त मेरे आदर और सत्कार में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बेगुनाही के सुबूत से अँधे कानून में जब इंसाफ़ शर्मसार है
समन्दर में बारिश से बेबस प्यासी ज़मीं की चीख पुकार है
सावन में पतझड़ का मौसम कुदरत पर निर्मम अत्याचार है
सूखी दरिया में लहरों की रवानी बेबस, मज़बूर व लाचार है

जब इंसानियत के ऐसे हालात है तो
उस वक़्त मेरे बेहाल दिल औ दिमाग़ में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

लहलहाती फ़सलें देखकर कर्ज़दार किसान की आस है
रेगिस्तान में दो बूँद के लिये तड़पते प्यासे की प्यास है
दूध पिलाती माँ के आँचल में प्रेम-ममता का अहसास है
मुद्दत से इंतज़ार व जुदाई में पिया मिलन के विश्वास है

जब ऐसी निर्मल आशायें है तो
उस वक़्त मेरे ऐतबार और उम्मीदों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दो-वचनों की मर्यादा में युवराज राम का वनवास है
बेक़ुसूर व पवित्र सीता का अग्नि परीक्षा में प्रवास है
बेबस और मज़बूर पाण्डवों का शर्मसार अज्ञातवास है
द्रोपदी के चीरहरण में नारी की लज़्जा का निवास है

जब ऐसी पवित्र मर्यादायें है तो
उस वक़्त मेरे वादों और इरादों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बिना पानी के दम तोड़ती मछली की तड़पन है
बिना हवा के दम घुटते हुए दिल की धड़कन है
बिना रोटी के भूख से ज़िन्दा रहने में अड़चन है
फुटपाथ पे सर्द रातों में नंगे बदन की जकड़न है

जब जीवन इतना मुश्क़िल है तो
उस वक़्त मेरे तन व मन के संचार में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इन्सानियत में सब लुटाने की शराफ़त है
दुश्मनी में सब कुछ मिटाने की अदावत है
मुहब्बत में सब कुछ भुलाने की बग़ावत है
दोस्ती में सब कुछ निभाने की शरारत है

जब ऐसे दीन औ ईमान है तो
उस वक़्त मेरे वादों और इरादों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

परेशानी के वक़्त में बच्चों के लिये माँ की चिन्तायें हैं
बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिये पिता की भावनायें हैं
शिष्य में गुरु से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की तमन्नायें हैं
गुरु के आशीर्वाद में निर्मल और पवित्र शुभकामनायें हैं

जब दिल में ऐसी ख़्वाहिशें है तो
उस वक़्त मेरी प्रार्थना और दुआओं में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

लंगड़े में बेसाखी से मंजिल तक पहुँचने के जज़्बात हैं
गुँगें के इशारों में अपनी बात समझाने के ख़यालात हैं
अँधे की आँखों में सब देखने की चाहत के सवालात हैं
बहरे के दिल औ दिमाग़ में बातें करने की मुलाक़ात है

जब ऐसी बेबसी व मज़बूरी है तो
उस वक़्त मुहब्बत के मधुर मिलन में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

देवर-भाभी के सम्बन्धों में मधुरतम् अहसास है
जीजा-साली के रिश्ते में क़शिश व मिठास है
प्रेमी-प्रेमिका में एक-दूसरे के होने के प्रयास है
पति-पत्नी के रिश्ते में एक-दूजे का विश्वास है

जब रिश्ते में ऐसे आभास है तो
उस वक़्त मेरे घर और परिवार में
सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बैंकों में रोजाना लेन-देन का पक्का हिसाब है
विद्यार्थी के परीक्षा में पास होने की किताब है
ईंट को पत्थर का तेज तर्रार क़रारा ज़वाब है
दुखी और बेसहारा की सेवा में पवित्र सवाब है

जब ऐसे आचार और विचार है तो
उस वक़्त मेरे तसव्वुर और ख़यालात में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

नई नवेली दुल्हन के चेहरे पर हिज़ाब है
नवयौवना किशोरी का मचलता शबाब है
हसीं मुलाक़ात में एक-दूजे को आदाब है
प्यार एक-दूजे के दिल में आलीज़नाब है

जब ऐसे ख़ूबसूरत अहसास है तो
उस वक़्त मेरे तन-मन के जज़्बात में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ख़ुश्बू से महकते चमन का दामन मस्ताना है
जलती हुई शमा पे मचलता मस्त परवाना है
फूल व कलियों पे मण्डराता भँवरा दीवाना है
सतरंगी तितलियों से ख़ूबसूरत आशियाना है

जब जहान ऐसा हसीं है तो
उस वक़्त मेरे घर और आँगन में
सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जनहित में विज्ञान की खोज औ आविष्कार है
अद्‌भुत और अनहोनी घटनाओं में चमत्कार है
रहस्य और रोमांच को ज़माने का नमस्कार है
अन्ध विश्वासों और कुप्रथाओं का बहिष्कार है

जब कायनात में ऐसी समझ है तो
उस वक़्त मेरे ख़्वाबों और ख़यालों में
सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सोने की लंका में सुनहरे ऐश्वर्य का ज़माना है
कुबेर के सोने के महल में वैभव का खज़ाना है
लक्ष्मी के साथ सरस्वती का निवास सुहावना है
गणेश व हनुमान की सूरत में इंसान मस्ताना है

जब संसार इतना धनवान है तो
उस वक़्त मेरे रोजगार और व्यापार में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपना परायेपन से अपना हो कर भी बेगाना है
बेगाना अपनेपन से पराया हो कर भी अपना है
प्यार की चाहत व क़शिश में महबूब दीवाना है
अपनी मुहब्बत की मदहोशी में मस्त मस्ताना है

जब रिश्तों में ऐसे अहसास हैं तो
उस वक़्त मेरे तसव्वुर और जज़्बात में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ताज महल की तामीरात मुहब्बत का निशान है
राष्ट्रपति भवन सुन्दर बाग बगीचों का जहान है
चित्तौड़ का विजय स्तम्भ वीरता की पहचान है
संसद भवन का वैभव देश के लिये आलीशान है

जब वतन में ऐसी विरासत है तो
उस वक़्त मेरी ऐतिहासिक धरोहर में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अर्जुन के धनुष में चिड़िया की आँख का निशान है
कवच औ कुण्डल के दान से दानवीर कर्ण महान है
सौ हाथियों से भी अधिक बलशाली भीम बलवान है
आजीवन बह्मचारी की प्रतिज्ञा में भीष्म की ज़ुबान है

जब वतन में ऐसी शख़्सियत हैं तो
उस वक़्त मेरे तन-मन के व्यक्तित्व में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

गान्धारी की आँखों में अन्धे पति का अन्धकार है
कुन्ती के मन में पाण्डवों के भविष्य का विचार है
सावित्री के तप में पति की ज़िंदगी का ऐतबार है
मन्दोदरी के व्यवहार में पति के लिये सदाचार है

जब ऐसी त्याग और तपस्या हैं तो
उस वक़्त मेरी आराधना व उपासना में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

भरत और राम के मिलन में भाई-भाई का प्यार है
सुग्रीव व राम की मित्रता में सहयोग व सदाचार है
हनुमान व राम में भक्त औ भगवान का व्यवहार है
राम के मन में पराजित रावण के प्रति शिष्टाचार है

जब ऐसे आचार और विचार हैं तो
उस वक़्त मेरी इन्सानियत की भावना में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्राण न्यौछावर करके भी जटायु का सहयोग है
सीता हरण के वक़्त राम का जुदाई में वियोग है
मुर्छित लक्ष्मण पर संजीवनी दवा का उपयोग है
सागर सुखाने के लिये धनुष-बाण का प्रयोग है

जब ऐसी भावनायें व सदाचार हैं तो
उस वक़्त मेरी ज़रूरतों औ जज़्बातों में
सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम ही हो मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

प्यार के अहसास

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

फ़कीर की दुआओं से
दिल की निर्मलता से
बदन की पवित्रता से
अज़र-अमर ईश्वर से

इस तरह के अहसास से
निर्मल-पवित्र रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सात सुर की लयताल से
सात रंगों के इंद्रधनुष से
सात वचनों की वाणी से
सातों फेरों के बन्धनों से

इस तरह के जज़्बात से
अज़र-अमर रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

कायनात में सावन की हरियाली से
बसंत में महकते चमन की क्यारी से
रिम-झिम बरसते बारिश के पानी से
मनमोहक पूनम की चाँदनी रातों से

इस तरह से ख़ुशगवार होकर
हर रोज़ आबाद रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

माँ में ममता की छाँव से
पिता की ज़िम्मेदारियों से
भाई-बहन के विश्वास से
पति-पत्नी के विश्वास से

इस तरह के पवित्र रिश्ते से
निर्मल रहे हमारा ख़ूबसूरत प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अनादि संसार के वजूद से
प्रेम दीवानों की नादानी से
बेबस औरत की अस्मत से
एक दरवेश की साधना से

इस तरह के हालात से
ज़ियारत जैसा रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दोस्ती में सब कुछ कुर्बानी से
स्वस्थ निरोगी कंचन काया से
मासूम बच्चों की मासूमियत से
कमल के फूल की सौम्यता से

इस तरह के अहसास से
निर्मल-पवित्र रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रंगीन-तितलियों के पंखों से
गुलाब के फूलों की रंगतों से
गर्मियों की सुहावनी सुबह से
सर्दियों में सूरज की उष्मा से

इस तरह के हसीन मौसम से
यादगार रहे हमारा हसीन प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

नीम के शजर में औषध गुण से
आँवले के अमृत बराबर फल से
बरगद की विशाल छत्र-छाया से
पीपल के शजर की पवित्रता से

इस तरह की उपयोगिता से
अजर और अमर रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेहनत व ईमानदारी के व्यापार से
मालिक और नौकर की ज़रूरत से
अदालतों में बेगुनाही के सुबूतों से
कुबेर के धन-दौलत के ख़ज़ाने से

इस तरह की इन्सानियत से
हमेशा सदाबहार रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सरहद पे जान की कुर्बानी से
झाँसी की रानी में बहादुरी से
चतुर शिवाजी की चालाकी से
महाराणा प्रताप की वीरता से

इस तरह की हिफ़ाज़त से
हमेशा महफ़ूज़ रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुलसी की पूजा-प्रार्थना से
ब्रह्माजी के सृष्टि निर्माण से
शिव की बेलगाम साधना से
पार्वती की तप व तपस्या से

इस तरह की पवित्रता से
तीर्थ-यात्रा रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

साधु सन्तों की आराधना से
अर्जुन के तीर में निशान से
युधिष्ठर के धर्म व न्याय से
माँ पन्नाधाय की कुर्बानी से

इस तरह की अक़ीदत से
हमेशा इबादत रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

देवी सीता के सतीत्व से
द्रौपदी के कठोर प्रण से
रावण की हठ धर्मिता से
ध्रुव में बेख़ौफ़ आस्था से

इस तरह की प्रतिज्ञा से
अज़र-अमर रहे हमारा प्यार।

अलविदा मेरे मधुर प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें हमेशा के लिये बेमौत मरकर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

अपने जीवन को नर्क से बदतर करने के लिये
अपने दिल-दिमाग़ को बदहाल करने के लिये
अपने घर व परिवार से बेवफ़ाई करने के लिये
रोजगार और व्यापार को तबाह करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें हैरान और परेशान होकर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

अपनी इंसानियत औ मानवता के सामने
अपने पवित्र और निर्मल प्यार के सामने
अपनों के विश्वास औ मुहब्बत के सामने
अपने अभिमान और स्वाभिमान के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें बेइज्ज़त और बेआबरू हो कर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

अपने परमपिता परमेश्वर के सामने
अपनी वफ़ा औ शराफ़त के सामने
अपने सच और हक़ीक़त के सामने
अपनी इबादत औ ईमान के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दर्दनाक़ और बेरहम ख़ुदकुशी से मरकर
हमेशा-हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

मुहब्बत को बेमौत मरने के लिये
जज़्बात को दफ़्न करने के लिये
ख़शियों को ख़त्म करने के लिये
तन्हाईयों में आँसू बहाने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत का संगीन क़ातिल होकर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

उसके चालाक-शातिर होने के लिये
उसके बार-बार बेवफ़ा होने के लिये
उसके बेहया औ बेशर्म होने के लिये
उसका हमेशा ख़ुदग़र्ज़ होने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें ख़न्ज़र और तलवार हो कर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

ज़िन्दगानी को ग़मगीन करने के लिये
जुदाई के दर्दो-ग़म में जलने के लिये
आशियाने को शमशान बनाने के लिये
अपने जज़्बात को दफ़्न करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें हैवान और शैतान हो कर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

महकते गुलशन को उजाड़ने के लिये
रोशन शाम को मायूस करने के लिये
सुनहरे दिनों को बेचैन करने के लिये
रातों में बेचैन करवटें बदलने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुम्हें ज़हर होना ही होगा
तुम्हें ख़न्ज़र होना ही होगा
तुम्हें ज़लील होना ही होगा
संगीन गुनाह करने के लिये
मुहब्बत का बेरहम क़त्ल कर

अपनी दर्दनाक ख़ुदकुशी के लिये
अब तो तुम्हें अलविदा होना ही होगा
तुम्हें हैवान और शैतान होना ही होगा
तुम्हें हैरान और परेशान होना ही होगा
तुम्हें हमेशा के लिये बेमौत मरना ही होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तो तुम्हें 'ज़हर' होकर
अलविदा तो होना ही होगा

मेरे प्रेम को बेमौत मरने के लिये
खुशियों को ख़त्म करने के लिये
तन्हाईयों में आँसू बहाने के लिये
दर्दनाक़ ख़ुदक़ुशी करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें 'ख़न्ज़र' हो कर
अलविदा तो होना ही होगा।

महकते गुलशन को उजाड़ने के लिये
रोशन शाम को मायूस करने के लिये
सुनहरे दिनों को बेचैन करने के लिये
रातों में बेचैन करवटें बदलने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें ज़हर होना ही होगा
तुम्हें ख़न्जर होना ही होगा
तुम्हें ज़लील होना ही होगा

तुम्हें हैवान और शैतान होना ही होगा
तुम्हें हैरान और परेशान होना ही होगा
तुम्हें हमेशा के लिये बेमौत मरना होगा
अब तुम्हें प्यार से अलविदा होना होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें 'हैरान व परेशान' होकर
अब तो अलविदा होना ही होगा

उसका गुनाहगार साबित होने के लिये
उसके बेईमाँ व बदनीयत होने के लिये
ज़माने के सामने बेआबरू होने के लिये
अपनों के सामने शर्मिन्दा होने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें 'ख़न्ज़र' हो कर
अब अलविदा होना ही होगा

अपने ख़ुशहाल जीवन की तबाही के लिये
अपने अहसास को तमाशा बनाने के लिये
पूनम की रात को अमावस करने के लिये
आबाद आशियाँ को तबाह करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें ज़हर का प्याला पीकर
अब तो अलविदा होना ही होगा

अपने प्रेम गीतों की हत्या करने के लिये
सुहावनी सुबह को उदास करने के लिये
अपने तन-मन को जख़्मी करने के लिये
शर्म से पानी-पानी हो कर जीने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम्हें हैवान और शैतान हो कर
हमेशा के लिये अलविदा होना ही होगा

उसकी नादानियों से बर्बाद होने के लिये
जुदाई के दर्द व ग़म में तड़पने के लिये
उसकी ग़लती की सज़ा भुगतने के लिये
ज़िंदगी को बेहद ग़मगीन करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुम्हें ज़हर होना ही होगा
तुम्हें ख़न्ज़र होना ही होगा
तुम्हें ज़लील होना ही होगा
संगीन गुनाह करने के लिये
मुहब्बत का बेरहम क़त्ल कर
अपनी दर्दनाक़ ख़ुदकुशी के लिये
अब तो तुम्हें अलविदा होना ही होगा
तुम्हें हैवान और शैतान होना ही होगा
तुम्हें हैरान और परेशान होना ही होगा
तुम्हें हमेशा के लिये बेमौत मरना ही होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा
अब तुम्हें अलविदा होना ही होगा।